बाजै काटी खोजड़ी, रस्ते दीवी रोपाय।
बूवौ ज बांध्यो खेजड़ी, म्हाँ घर जीमर जाय।।१०४।।

बाजो जसरासर तणो, दियो बिरादरी भोज।
एक अहेड़ी आ अठै, लियाँ हिरण रा खोज।।१०५।।

भूखो प्यासो हुवण सूँ, सक्यो न हिरण नै मार।
बाजै रै घर जीमकर, अहेड़ी हुय हुँसियार।।१०६।।

जा रोही में हरिण नै, दियो सिकारी मार।
कुपात्र नै दियो दान, करै मिनख नै ख्वार।।१०७।।

बाजो बड़ाई भर्यो, जम्भ गुरु कनै आय।
कह गुरु मैं ओ काज कर, शोभा मिली अतिशाय।।१०८।।

जमी पैठ मेरी गुरु, जात विरादरी माँय।
पुन बधियो धरम, हुयो जगत में नाँव।।१०९।।

गुरु कह बाजा चूक मत, धरम हुयौ के पाप।
हिरण मर्यो खेजड़ी कटी, औ कम हुयो न पाप।।११०।।

गुरु श्री जम्भेश्वर तणा, महिमा छंद बणाय।
च्याराँ ही शोभा करी, दिया छंद सुणाय।।१११।।

आलम सालू गायबी, मीठै स्वर माँ गाय।
साथ रैती गुरु रै नित, अै गया गुरु तन भाय।।११२।।

डाकू रावण गोयंदो, लूंका औ खोराज।
डाकौ नाखै धनपत्यां, लूट लेय घर नाज।।११३।।

पूरबली पुन्याई सूँ, खोराज लेय वैराग।
गुरु श्री मुख उपदेश सूँ, बुरा दिया सब त्याग।।११४।।

लूंको शुभ संग पाय र, सुण गुरु रो उपदेश।
संत गति पाईज इणा, जम्भ गुरु ज आदेश।।११५।।

कुल चंद भक्त गुरु तणो, जम्भ गुरु ढ़िग आय।
निवण प्रणाम किया गुरु, श्रद्धा शीश झुकाय।।११६।।

कुशल क्षेम पूछी ज गुरु, भक्त तणो अनुराग।
कुल चंद हुयो ज गद–गद, जाण बड़ो निज भाग।।११७।।

देशाटन गुरु अति प्रिय, कियो गुरु कई वार।
निरूपति कर सिद्धान्त निज, दिया ज गुरु ललकार।।११८।।

बिश्नोई पंथ थापियो, धर्म नियम उणतीस।
पाहल दे दीक्षित किया, हुवा ज विश्वा बीस।।११९।।

एक चारणी

एक चारणी गुरु कनै, आय कैयो औ बोल।
ऊंठ दिरावो मुझै, नी मोय कनै मोल।।१२०।

गुरु नै राजी करण नै, हंसली गळे उतार।
कयो गुरु आ आप ल्यौ, औ आप तणै सत्कार।।१२१।।

आ हंसली चाँदी खरी, लेवो गुरु आ आप।
जस गाऊँ आठुँ कोटड़्याँ, गाऊँ जस बे माप।।१२२।।

हंसली तेरे रखा कनै, मेरे पैरे कूण।
बहु बेटा मेरे नहीं, नीं घर वारी जूण।।१२३।।

जस भूखा ठाकर ठला, तनै दिरासी ऊँट।
मेरे सूं जा आंतरै, अबै दिखा तूँ पीठ।।१२४।।

आपरो सो मुंह लेय, गई चारणी दूर।
मेरे कनै नी है बगत, सुणा ज तेरी लूर।।१२५।।

पन्दरा सौ सु अष्टमी, विक्रम भादव बद।
गुरु श्री जम्भेश्वर प्रभु, अवतार लियो ज जद।।१२६।।

पह भल टोर्‌या नार नर, जम्भ गुरु महाराज।
लागे धर्म प्रचार मां, किये जनहित के काज।।१२७।।